ON THE MOVE

आधुनिक समय में पाठ्यचर्या की प्रकृति में अत्याधिक परिवर्तन हो गए हैं। जहाँ प्राचीन समय में पाठ्यचर्या का अर्थ पाठ्यवस्तु के रूप में लगाया जाता था वहीं वर्तमान में पाठ्यचर्या की परिभाषा बृहत व्यापक हो गयी है। वर्तमान में पाठ्यचर्या के अन्तर्गत वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित हैं जिन्हें अतिरिक्त पाठ्यक्रम क्रियाओं के नाम से जाना जाता है। पाठ्यक्रम की प्रकृति को निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है

(i) पाठ्यक्रम की प्रकृति में विद्यार्थी की ज्ञान वृद्धि हेतु नियोजित सभी परिस्थितियाँ तथा उन्हें उचित क्रमबद्ध करने वाले सैद्धान्तिक आधार सम्मिलित होते हैं।

(ii) इसमें शिक्षार्थी के सभी अनुभव, जिन्हें वह कक्षा, प्रयोगशाला, खेल का मैदान पुस्तकालय, पाठ्येतर क्रियाओं द्वारा ~~[illegible] अनुभव, जिनके वह कक्षा, प्रयोग शाला,~~ प्राप्त करता है सम्मिलित होते हैं।

(iii) पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक विषयों के साथ-साथ अनुभवों की सम्पूर्णता भी समाहित होती है

Scanned with CamScanner

Nature of Curriculum
पाठ्यक्रम की प्रकृति

पाठ्यक्रम की प्रकृति समय के अनुसार बदली है प्राचीन काल में पूर्णतया अनौपचारिक थी। उस समय बालकों की शिक्षा परिवार एवं समाज के माध्यम से होती थी शिक्षा का न कोई क्रम था और न ही वैधानिक थी। बालक परिवार एवं समाज के साथ सहभागी बनकर प्रत्यक्ष अनुभव व निरीक्षण द्वारा प्राप्त करता था। परन्तु जैसे जैसे सभ्यता का विकास होता गया ज्ञान में वृद्धि होती गई और मानव जीवन में विविधताऐं परिलक्षित होती गई जिसके कारण मानव के पास समय एवं साधन का अभाव होने लगा जिसकी पूर्ती के लिए शिक्षा की आवश्यकता होने लगी और प्रत्येक समाज ने सुव्यवस्थित शिक्षा एवं क्रमबद्ध शिक्षा का प्रयास करने लगे और इन्ही प्रयासों के फल स्वरूप विद्यालय स्थापना हुई लेकिन विद्यालय भी बालकों समुचित ढंग से महत्वपूर्ण एवं उपयोगी ज्ञान नहीं दे रहा था जिससे अनुभवी विद्वानों को यह जिम्मेदारी दी गयी कि बालकों और विद्यालयों में शिक्षा प्रदान करने हेतु ज्ञान निश्चित एवं निर्धारित किया गया था उसे पाठ्यचर्या कहा गया।

AIR IMPORTS & EXPORTS
OCEAN IMPORTS & EXPORTS
CONSOLIDATION SERVICES
CUSTOMS CLEARANCE
DRY & TEMP CONTROLLED WAREHOUSING
DRY & TEMP CONTROLLED TRANSPORTATION

Scanned with CamScanner